डिजिटल दैनिक साहित्य 24

www.sahitya24.com | राष्ट्रीय संस्करण | साहित्य कला और संस्कृति को समर्पित एक डिजिटल अभियान

वर्ष-03, अंक-01 | पृष्ठ-4 | डिजिटल अंक-01 | सोमवार, 10 अगस्त, 2026 | संपादक हरिप्रकाश पाण्डेय | मूल्य 0, निःशुल्क

BHAGAT HOSPITAL Works Wonders

BHAGAT HOSPITALS PVT. LTD.

BHAGAT HOSPITALS
2/48-49, Janak Puri, New Delhi-110058
Tel. No.:011-45102030

BHAGAT CHANDRA HOSPITALS
RZF-1/1, Mahavir Enclave, Near Palam-Dwarka Flyover, New Delhi-110045
Tel. No.:011-45254523/24/25

E-mail : info@bhagathospital.com, website : bhagathospital.com *NABH accreditation for both the hospitals

Delhi's Premier Family Health Care Facility with Professionally Managed Medical Staff Contact No. 9811279079

PATIENT SAFETY & QUALITY OF CARE NABH ACCREDITED
A NABH Accredited Hospital

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और 'सरस्वती': हिंदी नवजागरण का ऐतिहासिक अवदान

हर पत्रिका का अपना संघर्ष है। आज का लेखक जो पहले पाठक हुआ करता था अब सिर्फ लेखकीय छवि में जीना चाहता है तब पत्रिकाओं के समग्र श्रम का मूल्यांकन कौन करेगा?

यदि द्विवेदी जी द्वारा संपादित सरस्वती के पुराने अंक उठाकर किसी भी नई-पुरानी पत्रिका के अंकों से मिलाए जाएँ तो ज्ञात होगा कि पुराने हो चुकने पर भी इन अंकों में सीखने-समझने के लिए अन्य पत्रिकाओं की अपेक्षा कहीं अधिक सामग्री है।

द्विवेदी जी हमेशा कविता को रीतिवादी कूप से निकालकर काव्य-विषय के विस्तार के पक्षधर थे

द्विवेदी जी रूढ़िवाद के विरोधी और वैज्ञानिक चिंतन के पक्षधर थे। उन्होंने ऐसी तमाम रूढ़ियों एवं मान्यताओं का खुलकर विरोध किया जो सामाजिक एवं साहित्यिक विकास में बाधक थी।

डॉ. रामविलास शर्मा ने अपनी पुस्तक ह्यमहावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरणह्ण में द्विवेदी जी और ह्यसरस्वतीह्ण के वैशिष्ट्य को रेखांकित करते हुए लिखा है : ह्लयदि द्विवेदी जी द्वारा संपादित सरस्वती के पुराने अंक उठाकर किसी भी नई-पुरानी पत्रिका के अंकों से मिलाए जाएँ तो ज्ञात होगा कि पुराने हो चुकने पर भी इन अंकों में सीखने-समझने के लिए अन्य पत्रिकाओं की अपेक्षा कहीं अधिक सामग्री है। ह्यसरस्वतीह्ण सबसे पहले ज्ञान की पत्रिका थी। वह हिंदी नवजागरण का मुख पत्र थी और हिंदी भाषी जनता की सर्वमान्य जातीय पत्रिका भी।

एक प्रकार से देखें तो सरस्वती ने उस दौर की तत्कालीन समस्याओं को उजागर करने में हिंदी भाषी समाज के लिए एक मंच का काम किया। काबिलेगौर है द्विवेदी जी के संपादन-काल में भाव और भाषा के साथ-साथ विधागत स्तर पर भी काफी प्रगति हुई। सरस्वती पत्रिका की यह महत्त्वपूर्ण विशेषता रही है कि इसने हिंदी भाषा के अतिरिक्त

अन्य भाषा-विषयक सामग्री (साहित्य की समस्त विधाओं) को अनुवाद के जरिए सामने लाने का अनूठा कार्य किया।

सरस्वती उस दौर की अकेली ऐसी पत्रिका है जिसने बहुत ही का समय में न सिर्फ साहित्य जगत में बल्कि हिंदी पत्रिकारिता के इतिहास में अपनी गहरी पैठ बनाई है। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने भी इस संदर्भ में लिखा है कि- "द्विवेदी जी के सरस्वती-सम्पादन का इतिहास अनेक आंदोलनों का इतिहास है। वह उनके व्यक्तित्व और तत्कालीन समाज के विकास का इतिहास भी कहा जा सकता है।" (यामिनी, रचना भोला, 2010, पृ. 58) सरस्वती के माध्यम से द्विवेदी जी ने रीतिवाद का जमकर विरोध किया। वे रीतिकालीन श्रृंगारिकता एवं नायिका-भेद के घोर विरोधी थे। उनका मानना था कि रस, भाव, अलंकार, छंद-शास्त्र और निरा नायिका-भेद का वर्णन करने से मानव-सभ्यता (जाति) का विकास संभव नहीं है। इसीलिए वे हमेशा कविता को रीतिवादी कूप से निकालकर काव्य-विषय के विस्तार के पक्षधर थे।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने द्विवेदी जी के महत्त्व को रेखांकित करते हुए लिखा है- ह्लयदि द्विवेदी जी न उठ खड़े होते तो जैसी अव्यवस्थित व्याकरण विरूद्ध और ऊटपटांग भाषा चारो ओर दिखाई पड़ती थी, उसकी परंपरा जल्दी न रूकती। उसके प्रभाव से लेखक सावधान हो गए और जिनमें भाषा की समझ और योग्यता थी उन्होंने अपना सुधार किया।ह्ल (शुक्ल, रामचंद्र, 2000, पृ.-528) द्विवेदी जी ने इस पत्रिका का संपादन लगभग 18 वर्षों तक किया। पूरे समय तक उन्होंने सरस्वती को भाषा संस्कार, साहित्य संस्कार और हिंदी भाषी जाति के मानस संस्कार का प्रतीक बनाया।

हिंदी की अनस्थिरता को स्थिरता प्रदान करने एवं गद्य-पद्य की भाषा में एकरूपता लाने में द्विवेदी जी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इस संदर्भ में उन्होंने अपने एक लेख में लिखा है- "गद्य और पद्य की भाषा पृथक-पृथक नहीं होनी चाहिए। यह एक हिंदी ही ऐसी भाषा है जिसके गद्य में एक प्रकार की और पद्य में दूसरे प्रकार की भाषा लिखी जाती है। सभ्य समाज की जो भाषा हो उसी भाषा में गद्य-पद्यात्मक साहित्य होना चाहिए।... इसलिए कवियों को चाहिए कि क्रम-क्रम से वे गद्य की भाषा में भी कविता लिखना आरंभ करें। बोलना एक भाषा और कविता में प्रयोग करना दूसरी भाषा, प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध है।"

(मिश्र, सत्यप्रकाश, 1996, पृ.-36)

प्रेम का वृक्ष

प्रेम अंकुरित होता है
आपसी स्नेह की डोर से।
प्रेम का बीज पनपता है
धीरे-धीरे और,
धीरे-धीरे अंकुरित होकर वृक्ष बने,
प्रेम की बगिया बन छाया देकर।।
प्रेम में बँधकर चलती ये गाड़ी,
दो अनजाने बँधते हैं एक डोर से,
आपसी समर्पण और विश्वास से।।
प्रेम की फिर ज्योत जला कर,
बनते एक-दूसरे के जीवनसाथी,
खुद से ज्यादा एक-दूसरे को समझने से,
समय के साथ गहरा होता जाता है प्रेम,
और सारी उम्र बस एक-दूसरे में खोए रहते हैं।।
फिर जीवन की ढलती साँझ में,
जब अंत में जाने की बारी आती है,
तब छोड़कर जाने का मोह बाँध लेता है,
कई जन्मों के लिए सात फेरों का वास्ता देकर।।
प्रेम केवल साथ रहने का नाम नहीं,
यह तो एक-दूसरे में अपना संसार बसाने का नाम है,
जहाँ समर्पण में विश्वास और विश्वास में अपनापन हो,
वहीं प्रेम जीवन का सबसे सुंदर एहसास है।

अंजू मल्लिक
पटना, बिहार

शिमला के गेयटी थिएटर में हिमालय मंच की भव्य साहित्यिक गोष्ठी संपन्न

हिमालय साहित्य संस्कृति एवं पर्यावरण मंच द्वारा 8 अगस्त, 2026 को शिमला के एतिहासिक गेयटी थिएटर सभागार में एक साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन किया। यह आयोजन मुख्यतः हिमालय मंच के सक्रिय लेखक सदस्य श्री अश्वनी कुमार जी की सेवानिवृत्ति के बहाने बहुत ही मधुर और खुशनुमा माहौल में संपन्न हुआ। मंच के सदस्य 12 बजे हिमाचल पर्यटन विकास निगम के गुफा आशियाना रेस्तरां में एकत्रित हुए और अश्वनी जी को उनकी सेवानिवृत्ति पर उन्हें शुभकामनाएं दी और सम्मानित किया। जगदीश बाली जी ने अश्वनी जी के व्यक्तित्व पर विस्तार से बात की। अश्वनी जी लोक संपर्क विभाग के गिरिराज कार्यालय में सेवारत रहे हैं और कुछ सालों से वे मुख्य मंत्री कार्यालय में बतौर निजी सचिव नियुक्त थे जहां से वे सेवानिवृत्त हुए। उनके साथ मंच की लेखक सदस्या डॉक्टर अनिता शर्मा जी को भी उनके शिक्षा विभाग में उप

निदेशक के पद पर पदोन्नति होने पर सभी सदस्यों ने बधाई दी। उसके बाद दो बजे कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस आयोजन में मुख्य अतिथि श्री विजय कुमार, आई ए एस, विशेष सचिव, पर्यटन एवं वन थे। अध्यक्षता साहित्य अनुरागी प्रशासनिक अधिकारी केशव राम जी ने की और विशेष अतिथि ई.सलिल शमशेरी, पूर्व कार्यकारी निदेशक, एसजेवीएन, डॉ. अनिता शर्मा, अप निदेशक, शिक्षा विभाग और डॉ.सत्यनारायण स्नेही, विभागाध्यक्ष, राजकीय महाविद्यालय संजौली रहे। यह साहित्य गोष्ठी हिंदी और लोक बोलियों की कविताओं के लिए समर्पित थी जिसमें चालीस से अधिक युवा और वरिष्ठ लेखकों ने कविताएं पढ़ी। इस गोष्ठी में इस बार भी ऐसे युवा और वरिष्ठ कवि थे जिन्होंने पहली बार किसी मंच से रचनाएं पढ़ीं। मुख्य अतिथि और विशेष अतिथिगणों ने इस तरह के आयोजनों को जरूरी बताया और प्रसन्नता जाहिर की कि हिमालय मंच निरंतर नए रचनाकारों और छात्रों को मंच प्रदान कर रहा है। मंच का खूबसूरत संचालन दीप्ति सारस्वत प्रतिमा ने किया।

इस आयोजन में जो लेखक शामिल रहे उनमें थे डॉ. मीनाक्षी एफ पॉल, अंकुश शर्मा, चेतराम भार्गव, स्वप्निल, भूप रंजन, वंदना राणा, डॉ.राजेश वर्मा, दिनेश शर्मा, डॉ देव कन्या ठाकुर, डॉ रोहिणी वर्मा, गुलपाल वर्मा, ओम प्रकाश शर्मा, डॉ विजय लक्ष्मी नेगी, राधा सिंह, कल्पना गांगटा, स्नेह नेगी, हेमलता, कौशल्या ठाकुर, कुलदीप गर्ग तरुण, वीरेंद्र शर्मा, शांति स्वरूप शर्मा, दक्ष शुक्ला, जगदीश बाली, अश्वनी कुमार, कमला भोयल, कृष्णा कश्यप, नीता अग्रवाल, तारा चौहान, मंजू शर्मा, अनिता शर्मा, प्रेम शर्मा, दीपक ठाकुर, वसुंधरा धमार्नी, संजय कुमार, रवि भूषण, विश्वमोहिनी, इंदु परिहार, गीतांजलि और कई अन्य लेखकगण। मीडिया और लाइव कवरेज देव भूमि कला मंच के निदेशक देवेंद्र जी ने बहुत ही बढ़िया अंदाज में की।

आगरा की वह शाम, जो हमेशा याद रहेगी

धारा चेतना फाउंडेशन द्वारा 8 अगस्त को आगरा में आयोजित कवि सम्मेलन वास्तव में अद्भुत, भव्य और आनंददायक रहा। यह आयोजन धरा चेतना फाउंडेशन के सभी पदाधिकारियों , सदस्यों एवं युवा कवि भाई ईशान देव के अथक परिश्रम, लगन और समर्पण का शानदार परिणाम था। कार्यक्रम ने जिस ऊंचाई को छुआ, वह निश्चित रूप से लंबे समय तक याद की जाएगी।

सशक्त युवा हस्ताक्षर भाई ईशान देव ने कम उम्र में ही अपनी अलग पहचान बनाई है। वीर रस की शानदार कविताओं के साथ-साथ उनका कुशल एवं प्रभावशाली संचालन भी सबको आश्चर्यचकित कर गया।

हास्य रस के बड़े नाम, आदरणीय बड़े भैया रमेश मुस्कान जी की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। अपनी हास्य क्षणिकाओं और चुटीले अंदाज से पल भर में श्रोताओं के चेहरों पर मुस्कान बिखेर देने वाले आदरणीय रमेश मुस्कान भैया का सानिध्य हमेशा

उत्साह बढ़ाता है।व्यंग्य के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले डॉ. अनुज त्यागी जी की उपस्थिति भी बेहद खास रही।

वहीं गीत और गजल के बड़े नाम, प्रयागराज की धरती से पधारे बड़े भैया श्लेष गौतम जी ने अध्यक्षीय काव्य पाठ से कवि सम्मेलन को जो ऊंचाइयां प्रदान कीं, उसके लिए शब्द कम पड़ जाते हैं। उनकी प्रस्तुति ने पूरे वातावरण को साहित्यिक गरिमा से भर दिया।

मैने भी हास्य छंदों और कविताओं से श्रोताओं के गुदगुदाने प्रयास किया , कुछ पल के लिए जीवन से तनाव दूर करने की कोशिश की और जिस आत्मीयता एवं उत्साह के साथ श्रोताओं ने कविताओं को सुना, वह मेरे लिए बेहद सुखद अनुभव रहा।

सबसे खास बात यह रही कि यह केवल एक कवि सम्मेलन नहीं, बल्कि एक पारिवारिक और आत्मीय साहित्यिक आयोजन था। आगरा शहर के चुनिंदा गणमान्य एवं साहित्यप्रेमी लोग इसमें उपस्थित रहे। लगभग ढाई घंटे तक चले इस कवि सम्मेलन में श्रोताओं ने कविताओं का भरपूर आनंद लिया,खूब तालियां बजीं, खूब ठहाके गूंजे और कवियों के साथ आत्मीय संवाद भी हुआ।

कार्यक्रम के अंत में श्रोताओं का एक-एक कवि के साथ सेल्फी लेना और उनकी कविताओं पर अपनी प्रतिक्रिया देना यह साबित कर रहा था कि आगरा में कविता के कद्रदानों की कोई कमी नहीं है। यहां के लोग कविता को सिर्फ सुनते नहीं, बल्कि उसे महसूस भी करते हैं और कवियों को दिल से सम्मान देते हैं।

मैं धारा चेतना फाउंडेशन के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों को इस शानदार आयोजन के लिए हृदय से बधाई देता हूं। विशेष रूप से दीपाली जी, गति जी, श्रुति जी और अक्षय प्रताप जी का बहुत-बहुत आभार, जिन्होंने इस आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। और अपने भाई ईशान देव जी का भी विशेष धन्यवाद, जिन्होंने मुझे इतने अद्भुत श्रोताओं और साहित्य एवं समाज के प्रति समर्पित लोगों से मिलवाया।

आगरा की वह शाम मेरे लिए सचमुच यादगार हो गई।

कविता, कवियों और श्रोताओं के इस अद्भुत संगम को देखकर मन आनंद से भर गया। धारा चेतना फाउंडेशन को इस शानदार आयोजन के लिए बहुत-बहुत बधाई एवं भविष्य के लिए अनंत शुभकामनाएं।

'किसलय सा '

होता हिय है किसलय सा,
विशिख रिपू से है छल जाता।
स्नेह बोल से सिंचित होता वह,
नव उल्लास में है ढ़ल जाता।
अंतस का कर्मठता प्रहरी,
निष्ठावान तब है बन जाता।
निजबल से फिर हो सजग वह,
सरल सुरम्य सा पथ दिखलाता।
हृदय द्वार में हो जब निश्चछता,
हो आल्हादित फिर वह खिल जाता।
रहे भावना यही प्रिय तो,
सहज, सुगम मार्ग मिल जाता।
मन से नैराश्य तम हर करके,
उत्कृष्ट, अलौकिक दीप जल जाता।
रहे सत्यता यदि उर में तब,
सुंदर, रम्य भाव फल जाता।
मानों जलधि के सम सांद्र वह,
उत्तम चिंतन से भर जाता।
अंतर में कर चेतन धारण,
हो आल्हादित आभार मनाता।

मुक्ति भंडारी 'ममता'
स्वरचित एवं मौलिक

पुरुषों ने प्रेम को जितना समझा उतना स्त्री नहीं समझ पायी....

पुरुषों ने प्रेम को सहज भाव दिया ..
और स्त्री ने काल्पनिक कहानी.....
पुरुषों ने अपने हर दायित्व के साथ प्रेम को निभाया ...
स्त्री ने हर दायित्व निभाने की पुरुषों से ही अपेक्षा की ...
समय ...उपहार .. व्यवहार .. सम्मान ...
सब मिले और बिना कहे उनकी हर बात सुनी और समझी जाए ...
और पुरुषों ने भी अपना सर्वस्व न्योछावर किया इतने पर भी स्त्रियों की शिकायत कम नहीं हुई ...
वो ये भूल जाती हैं उनकी सारी उम्मीदों को पूरा करते हुए कितनी बार टूटा होगा वो पुरुष ..
कितने संघर्ष कितने कष्ट सह कर भी उसने अपनी पसंदीदा स्त्री की हर ख्वाइश पूरी की है ...
तो मेरा निवेदन है उन सभी स्त्रियों से ...
प्रिंसेस ट्रीटमेंट अगर चाहती हो तो अपने पसंदीदा पुरुष को भी प्रिंस ट्रीटमेंट देने का प्रयास करो ...
वो भी इंसान है आपकी ही तरह ....
उसे भी समझने की कोशिश करो ..
उसके आपके सपने पूरे करने के पीछे के संघर्ष को अपने संतोष स्वभाव का आश्रय दीजिए !.
वो जो आपका दिल रखता है वो भी तो एक दिल रखता है !

मीनू

घर की आत्मकथा

प्रतिमा निवास

सुबह के चार बजे थे। श्यामा गाड़ी से उतरी। चारों ओर घुप्प अँधेरा पसरा था। सामने धुंधले अँधेरे में ह्यप्रतिमा निवासह्ल जीर्ण-शीर्ण अवस्था में खड़ा था–मानो वर्षों से किसी अपने के लौटने की प्रतीक्षा कर रहा हो।

श्यामा ने काँपते कदमों से दहलीज पर पैर रखा ही था कि अचानक घर की दीवारों में हलचल-सी हुई।

एक काँपती हुई आवाज उसके कानों से टकराई–

कौन हो? आज इस दहलीज पर कौन आया है?

श्यामा ठिठक गई।

अगले ही पल वही आवाज जैसे पहचान की खुशी से भर उठी–

अरे! तुम तो इस घर की लाडो होह्ल आओ, अंदर आओ।

श्यामा चारों ओर देखने लगी। धूल की मोटी परत, जर्जर दीवारें, टूटी खिड़कियाँ और सूना आँगनह्ल सब कुछ जैसे बीते हुए दिनों की कहानी कह रहा था।

घर फिर बोला–

उदास मत हो लाडो। तुम्हें उदास देखकर मैं भी टूट जाऊँगा। आओ, अंदर बैठो। आज तुम्हें पानी देने वाला भी कोई नहीं है।

श्यामा की आँखें भर आईं।

एक समय था, जब मैं गुलजार रहता था। मेरी मालकिनह्ल आह! क्या रूप था उनका! साक्षात लक्ष्मी थीं। सुशील, सरल और परोपकारी। उनके रहते मेरा कोना-कोना चमकता था। आँगन में सुबह से शाम तक चहल-पहल रहती थी।

मुझे आज भी वह दिन याद है, जब ईंट-पत्थरों से मेरा अधूरा निर्माण हुआ था। अधूरा होते हुए भी मैं कितना खुश था। तुम्हारी माँ प्रतिमा ने कितनी मेहनत से ईंटें जोड़कर मेरी बाहरी दीवार खड़ी की थी। कच्चे प्लास्टर से ही सही, लेकिन उसमें उनके सपनों की मजबूती थी।

छोटी, याद है? तुम भी तो साथ रहती थी।

श्यामा के होंठ काँपे, मगर आवाज नहीं निकली।

घर बोलता रहा–

एक सुकून बसता था मेरे भीतर। घर के बेटे सब बाहर रहते थे। उन्हें समय कहाँ था? कभी मन हुआ तो आ जाते, भले एक दिन के लिए ही सही, मगर उनके आते ही मेरे सूने कोने रौनक से भर जाते थे।

हाँ, उस समय भी मैं तुम्हारी माँ को बड़े बेटे के इंतजार में उदास देखता था। उनकी आँखों में बसी प्रतीक्षा मुझे भीतर तक तड़पा देती थी।

मुझे आज भी याद हैह्ल बारह साल तक बड़े बाबू नहीं आए थे।

मैंने इस घर की हर खुशी देखी है और हर गम सहा है।

जब छोटी, तुम्हारी विदाई हुई थी, तब मेरी दीवारें भी जैसे रो पड़ी थीं। तुम्हारे जाने के बाद धीरे-धीरे सब कुछ बदलने लगा।

मालिक बूढ़े हो चले थे, फिर भी उन्हें मेरी चिंता रहती थी। हर साल मेरी दीवारों पर पुताई होती थी। दीपावली आते ही मैं नए वस्त्र पहने दुल्हन-सा सज जाता था। होली में मेरे आँगन में रंगों की जगह भले सन्नाटा रहता, मगर रसोई से बनते पकवानों की खुशबू मेरे भीतर तक उतर जाती थी।

लेकिन मालकिन को उदास देखकर मेरी खुशियाँ भी फीकी पड़ जाती थीं।

एक दिन मालिक कुछ दिनों के लिए बाहर गए। मैं उनकी राह देखता रहा। मुझे क्या पता था कि वह इंतजार कभी खत्म नहीं होगाह्ल मालिक लौटकर नहीं आए।

उनके जाने के बाद मालकिन छोटे बेटे के पास चली गईं।

और उसी दिन से मैं.. अनाथ हो गया।

मालकिन के कर्म में जब घर के सभी लोग आए थे, तब कुछ दिनों के लिए फिर मेरे आँगन में रौनक लौटी थी। लगा था, शायद अब सब कुछ फिर से पहले जैसा हो जाएगा।

लेकिन आज बीस वर्ष गुजर गए।

अब कोई नहीं आता।

पिछले बरस मझले भाई आए थे। मैं उन्हें देखकर कितना खुश हुआ था। लगा था, शायद अब मेरी मरम्मत होगी, मेरी दीवारों में फिर से साँसें लौटेंगी।

लेकिन उन्होंने तो मेरा एक हिस्सा ही पूरा तोड़ दिया।

वह कमरा..

मालिक ने कितनी मेहनत से बनाया था उसे।

उसे टूटते देखकर मेरी दीवारें ही नहीं, मेरा दिल भी टूट गया।

आज मैं खंडहर बनकर खड़ा हूँ।

तुम्हें बैठाऊँ भी तो कहाँ, लाडो?

इतने वर्षों बाद आई हो और मेरे पास तुम्हें देने के लिए अब कुछ भी नहीं बचा।

यह प्रतिमा निवास अब केवल नाम भर रह गया है।

बस तुमसे ही अब एक उम्मीद है।

मालिक ने अपनी बेटियों के लिए भी कमरे रखे थेह्ल उन्हें भी तोड़ दिया गया।

पर तुम चिंता मत करना।

जब तक मेरी एक भी दीवार खड़ी है, जब तक मेरी साँसें बाकी हैं–

मैं तुम्हें वही स्नेह दूँगा,
वही दुलार दूँगा,
जो कभी तुम्हारी माँ की गोद और इस घर के आँगन ने तुम्हें दिया था।

श्यामा जड़ होकर खड़ी रही।

उसकी आँखों से आँसू लगातार बह रहे थे।

वह अपने बचपन के उस घर को देख रही थी, जो कभी उसके लिए दुनिया का सबसे सुरक्षित कोना था और आज अपने ही लोगों की बेरुखी से खंडहर बन चुका था।

उसने धीरे से दीवार पर हाथ रखा।

दीवार ठंडी थीह्ल मगर उसमें अब भी माँ की हथेलियों की गर्माहट महसूस हो रही थी।

श्यामा फूट पड़ी।

और प्रतिमा निवास की खामोश दीवारें भी जैसे वर्षों बाद अपनी लाडो के लौटने पर रो पड़ीं।

अंजू मल्लिक
पटना, बिहार

साहित्य 24 पब्लिकेशन द्वारा जुलाई 2026 में प्रकाशित पुस्तकें.....

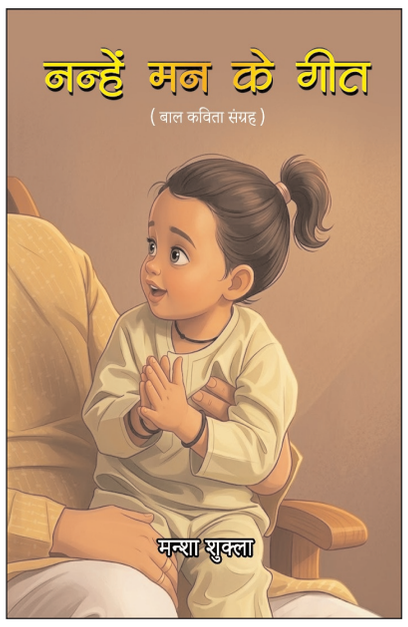

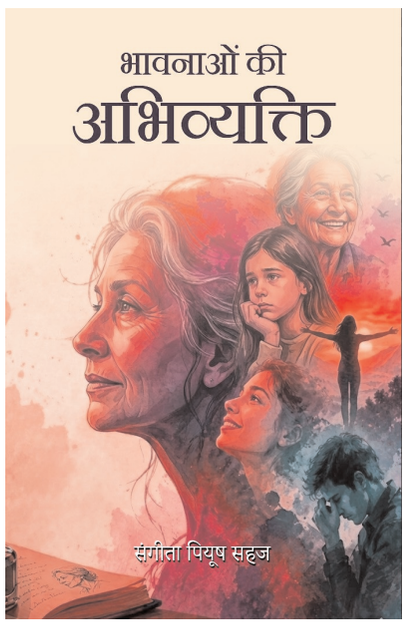

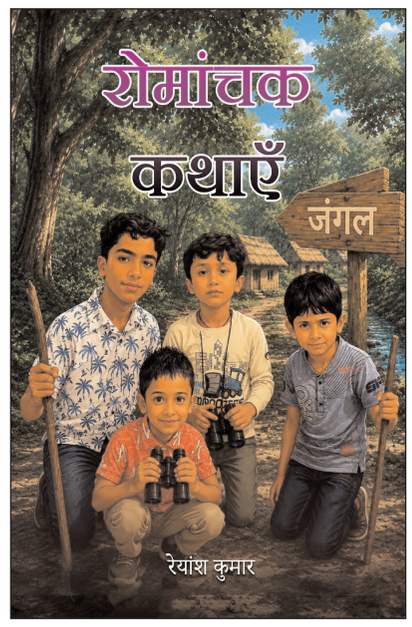

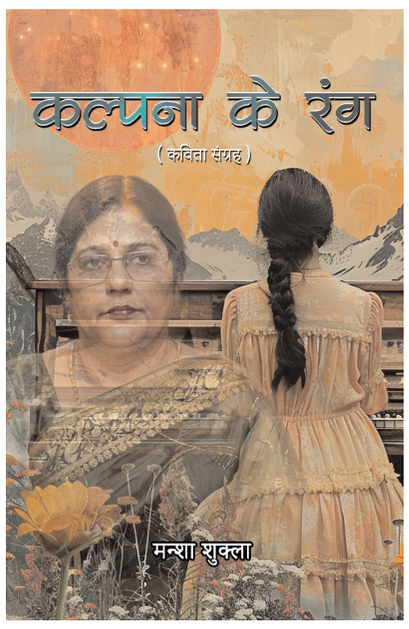

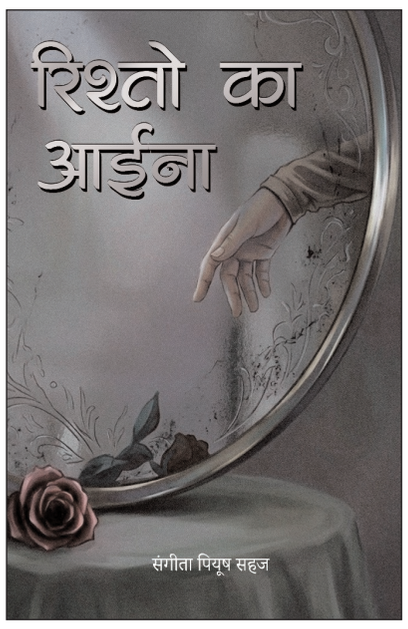

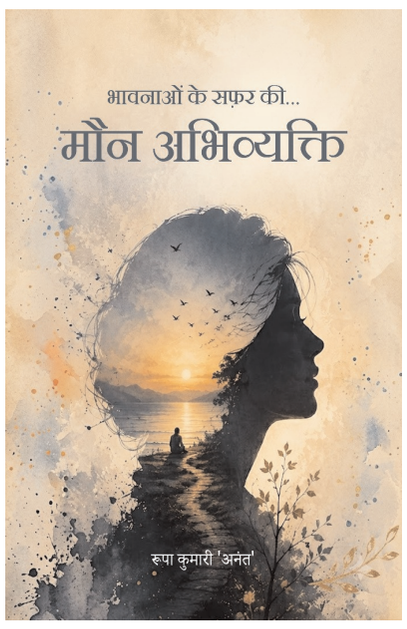

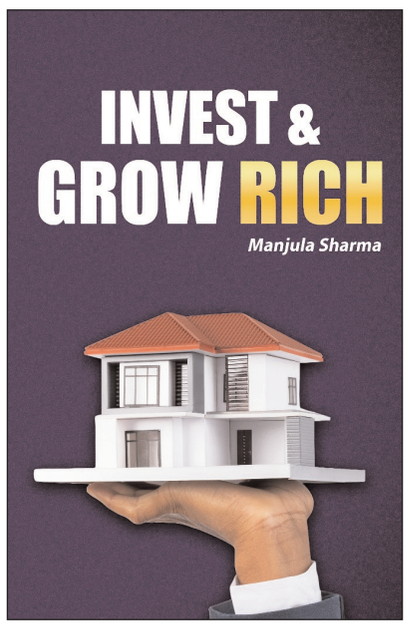

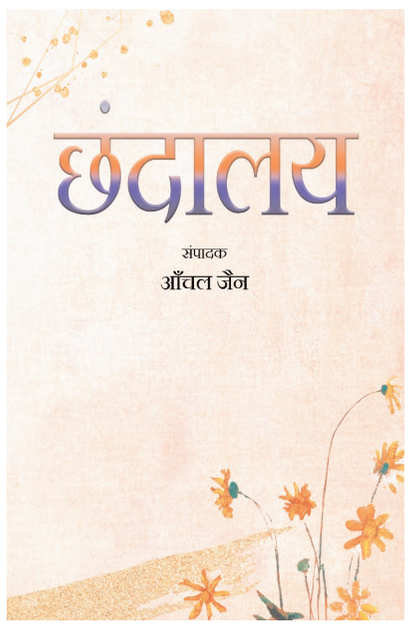

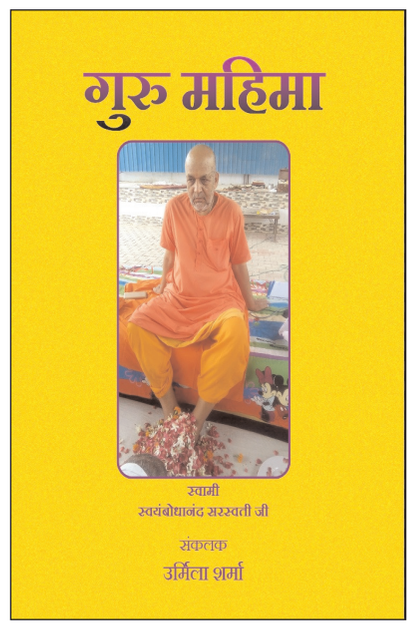

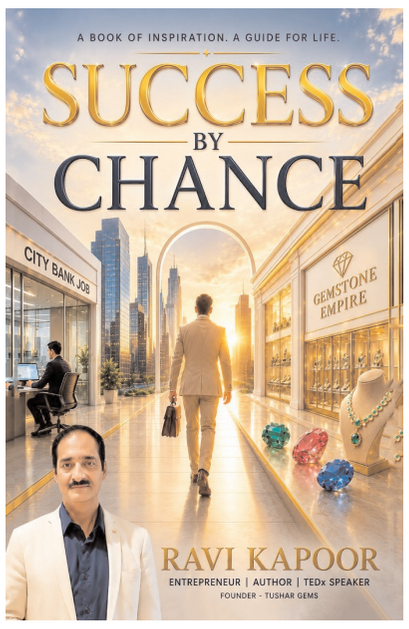

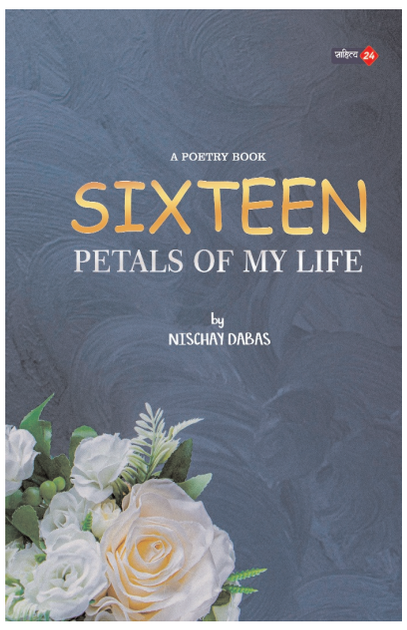

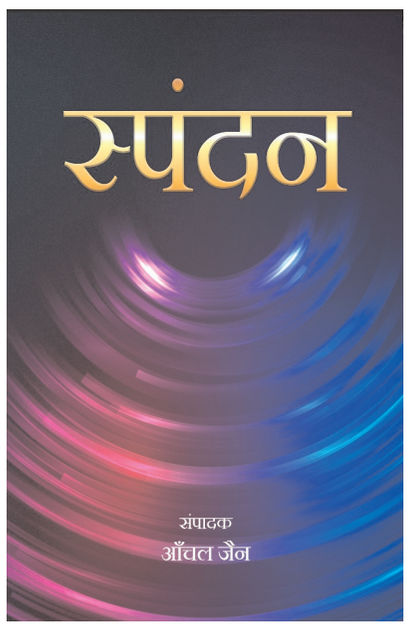

देवेन्द्र माँझी का साहित्यिक अवदान: एक विस्तृत विवेचन

पूनम चतुर्वेदी

समकालीन हिंदी और उर्दू साहित्य के परिदृश्य में देवेन्द्र माँझी एक अत्यंत सशक्त, बहुमुखी और प्रतिष्ठित हस्ताक्षर हैं। देवेन्द्र माँझी जी का रचना-संसार बहुत व्यापक है। उन्होंने गजलों के साथ-साथ गीत, दोहे और गद्य (उपन्यास) भी लिखे हैं, जिसमें उनके गहन चिंतन और उदात्त मानवीय बोध की सार्थक उपस्थिति दिखाई देती है। एक रचनाकार के रूप में उनका सबसे बड़ा गुण उनकी संवेदनशीलता और समाज के प्रति उनकी गहरी जवाबदेही है। साहित्य के प्रति उनके समर्पण का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि वे अब तक अपनी 30 पुस्तकें (कृतियाँ) हिन्दी साहित्यिक-समाज को प्रदान कर चुके हैं। इसके अलावा आपकी चार कृतियाँ उर्दू लिपि में भी प्रकाशित हुई हैं। इसके अतिरिक्त, उन्होंने अपने दौर के मशहूर शायरों की चुनिंदा शायरी पर आधारित आठ पुस्तकों का सफल संपादन भी किया है।

उनका साहित्यिक अवदान केवल कविता या गद्य तक सीमित नहीं है, बल्कि तुकान्तकोश, शब्दकोश और मुहावराकोश के निर्माण में भी ऐतिहासिक और अद्वितीय योगदान रहा है। देवेन्द्र माँझी के संपूर्ण साहित्यिक अवदान को हम उनकी रचना-विधाओं के आधार पर निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत समझ सकते हैं:

1. गजल साहित्य में यथार्थ और संवेदना का स्वर : देवेन्द्र माँझी मूलतः मुहब्बतों और मानवीय संवेदनाओं के शायर हैं। लगभग चार दशक पूर्व उनका पहला गजल-संग्रह समंदर के दायरे प्रकाशित हुआ था, जिसने साहित्य-प्रेमियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया था। इसके पश्चात उनकी गजलों के कई महत्त्वपूर्ण संग्रह प्रकाशित हुए, जिनमें नगर करायेगा विषपान मुझे, शीशे का इन्किलाब, हादिसा हूँ मैं, क्यों सभी खामोश हैं, मजबूरियां मेरी, इशारे हवाओं के, ये रोशनी मेरी नहीं और मैं ही मौका हूँ प्रमुख हैं।

उनकी गजलें अपने समय और आबो-हवा की खुशबू से लबरेज हैं। उनमें समाज के जटिल यथार्थ को ईमानदारी और बेबाकी से व्यक्त करने की अद्भुत क्षमता है। माँझी जी की गजलों में जहाँ एक ओर रोमानी पहलू, प्रेम, विरह, अकेलेपन और उदासी के गहरे रंग हैं, वहीं दूसरी ओर ज़िंदगी के प्रति एक शिकायत भरा स्वर भी मौजूद है, जिसके भीतर आशा और विश्वास की झंकार सुनाई देती है। वे मानते हैं कि आँसू किसी भी कवि या साहित्यकार के लिए उपकरण का कार्य करते हैं, जिसने उन्हें निखारा है।

उनकी गजलों में जीवन के कठोर और खुरदरे यथार्थ का चित्रण है। वे आम आदमी की समस्याओं, राजनीतिक विद्रूपताओं और उच्च-वर्गीय समाज द्वारा निम्न-वर्गीय लोगों के शोषण को अपनी शायरी का विषय बनाते हैं। वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. शेरजंग गर्ग के अनुसार, माँझी जी ने अपनी गजलों को आत्मीयता की पोशाक में सँवारकर पेश किया है और ज़िंदगी के वास्तविक पहलुओं से सीधा रिश्ता कायम किया है।

2. मक़्ते में तखल्लुस का अद्वितीय और प्रतीकात्मक प्रयोग : उर्दू-हिंदी गजल परंपरा में मक़्ते (गजल का अंतिम शेर) में शायर के तखल्लुस (उपनाम) का प्रयोग एक सामान्य बात है, लेकिन देवेन्द्र माँझी ने अपने उपनाम माँझी का जिस कौशल और कलात्मकता के साथ प्रयोग किया है, वह विस्मयकारी है। उन्होंने माँझी शब्द को नदी, तूफान, नाव, भँवर, दरिया, समंदर, लहर, तट, रवानी, कश्ती और पतवार जैसे शब्दों के साथ रूपकों में ढालकर बला की खूबसूरती पैदा की है।वे अपने तखल्लुस के माध्यम से लहरों, साहिलों और तूफानों से खेलते, जूझते और उन्हें चुनौती देते हुए नजर आते हैं। डॉ. शेरजंग गर्ग ने उनके इस मक़्ता-प्रयोग की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा है कि पूर्ववर्ती या समकालीन पीढ़ी के अनेक शायरों ने तखल्लुस रखे, मगर अपने उपनाम का इतना सटीक और सार्थक अंदाज कोई और नहीं दे पाया जैसा देवेन्द्र माँझी ने दिया है।

3. गीत और नवगीतः प्रकृति, प्रेम और दर्शन का त्रिवेणी संगम गजल के साथ-साथ देवेन्द्र माँझी ने गीत और नवगीत विधा में भी अत्यंत उत्कृष्ट रचनाएँ की हैं। उनका संग्रह हंस अकेला उड़ जाता है उनके गीतों की संरचनात्मक विविधता और वैचारिक गहराई का प्रामाणिक दस्तावेज है।भारतीय सनातन परंपरा के अनुरूप माँ शारदे की वंदना से प्रारंभ होने वाले इन गीतों में राष्ट्रभक्ति, प्रेम, श्रृंगार और जीवन के दार्शनिक पहलुओं का अद्भुत चित्रण है। वे स्वयं को तुलसी का वंशज और फक्कड़ कबीर की पद-रज मानते हैं और जीवन में सत्य बोलने की शपथ लेते हैं। उनके गीतों में जीवन-संघर्ष के सत्य को उजागर किया गया है, जहाँ वे मानते हैं कि बिना सींचे और सँवारे उपवन में फूल नहीं खिलते। माँझी जी के गीतों में श्रृंगार-रस से सराबोर अनुपम रचनाएँ हैं (जैसे चाँदनी की देह को चूमा करूँ) और साथ ही आधुनिक काल के निरुद्देश्य जीवन पर गहरा कटाक्ष भी है। वे मानव जीवन की नश्वरता को समझाते हुए लिखते हैं कि यह देह एक दुर्लभ खिलौना है जो एक दिन टूट जाता है और हंस अकेला उड़ जाता है। उनके गीतों में प्रतीकों और उपमानों का जादुई प्रयोग हुआ है, जो पाठक को भाव-विभोर कर देता है। अब उनके गीतों का नया संग्रह हम तुम सब कस्तूरी मृग हैं जल्दी ही पाठकों के हाथों में आने वाला है।

4. दोहा साहित्यः सामाजिक विसंगतियों और यथार्थ का दर्पण देवेन्द्र माँझी का दोहा-संग्रह झुकी पीठ पर बोझ उनके साहित्यिक अवदान का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। उनके दोहों का कथ्य मुख्य रूप से गरीबी, रिश्ते-नाते, झूठ, छल-कपट, शोषण, वेश्यावृत्ति, संवेदनहीनता और राजनीतिक विद्रूपताओं से जुड़ा है।

वे मानते हैं कि मनुष्य के जीवन में गरीबी सबसे बड़ा अभिशाप है, जो उसे मजबूर कर देती है। उनके दोहे आम आदमी की उस पीड़ा को स्वर देते हैं जहाँ एक मजदूर खाली पेट सोने को विवश है और एक भूखी माँ के सूखे स्तनों को चूसकर बच्चा बिलख रहा है। माँझी जी ने गरीबी के कारण उत्पन्न होने वाली अनैतिकता और देह-व्यापार में फँसी लड़कियों की व्यथा-कथा को भी अपने दोहों में अत्यंत मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया है। समाज में पनपते पाखंड, पुलिस और अपराधियों की मिलीभगत और सत्ता के खेल पर उनके दोहे तीखा प्रहार करते हैं। उनका दोहा साहित्य समाज के उस कुरूप चेहरे को सामने लाता है जिसे अक्सर चकाचौंध के पीछे छिपा दिया जाता है।

5. विश्व का सबसे बड़ा तुकान्तकोश और मात्रिक उर्दू-हिंदी कोश : कविता और साहित्य सृजन के अतिरिक्त देवेन्द्र माँझी का सबसे बड़ा, ऐतिहासिक और शोधपरक अवदान उनके द्वारा निर्मित कोश (ऊ३ङ्क्लल्लंश्नी२) हैं। उन्होंने विश्व का सबसे बड़ा और सम्पूर्ण तुकान्त-कोश (अद्भुत लयात्मक शब्द-सागर) तैयार किया है, जिसे इण्डिया बुक ऑफ रिकॉर्ड, एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड, वंडर बुक ऑफ रिकॉर्ड ऑस्ट्रेलिया और इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्ड से सम्मानित किया जा चुका है। लगभग दो हजार पृष्ठों का यह माँझी तुकान्त कोश (दो खंडों में) नवोदित और स्थापित दोनों प्रकार के कवियों और शायरों के लिए एक वरदान है।

इसके साथ ही, गजल लिखने और कहने वालों के लिए विशेष रूप से उन्होंने मात्रिक उर्दू-हिंदी कोश (खंड 1 और 2) का निर्माण किया है। लगभग पंद्रह सौ पृष्ठों के इस महाग्रंथ की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें प्रत्येक शब्द की तक़्तीअ (मात्रा-भार) सहित जानकारी दी गई है। साहित्य के क्षेत्र में, विशेषकर गजल के तकनीकी पक्ष (बहर और वजन) को सुगम बनाने के लिए किया गया यह भगीरथ प्रयास देवेन्द्र माँझी को हिंदी-उर्दू साहित्य के चंद सबसे समर्पित विद्वानों की श्रेणी में खड़ा कर देता है।

6. भाषा-शैली, प्रतीक और मिथकों का प्रयोग : माँझी जी की भाषा अत्यंत सहज, संप्रेषणीय और लोकोन्मुखी है। उन्होंने अपनी बात कहने के लिए उर्दू-हिंदी के साथ-साथ आवश्यकता पड़ने पर अंग्रेजी शब्दों (जैसे-ग्राफ, ई-मेल, इंटरनेट, गूगल) का भी बेझिझक और सटीक प्रयोग किया है।

उनके साहित्य में उपमा-उपमेय विषयक शब्द-प्रतीकों का अनूठा विधान है। वे अपनी गजलों और गीतों में पौराणिक मान्यताओं, परम्पराओं और कथाओं का अद्भुत तरीके से प्रयोग करते हैं। उनके काव्य में राम, सीता-हरण, रावण, शंकर (शिव), सुकरात, नरसी का भात, द्रोपदी और अहिल्या जैसे मिथकों और संदर्भों का प्रचुर प्रयोग मिलता है, जो आधुनिक राजनीतिक और सामाजिक संदर्भों में बिल्कुल सटीक बैठते हैं। इसके अतिरिक्त लोक-जीवन के मुहावरों–जैसे ऊँट पहाड़ के नीचे, ओखली में सिर देना, एड़ियाँ रगड़ना–का प्रयोग उनकी भाषा को मिट्टी की सौंधी महक से जोड़ देता है।

देवेन्द्र माँझी का साहित्यिक अवदान मात्र कुछ पुस्तकों के प्रणयन तक सीमित नहीं है। वे एक ऐसे रचनाकार हैं जिन्होंने जीवन के धूप-छाँव, सुख-दुःख और संघर्ष को अपनी चेतना में आत्मसात किया और उसे पूरी ईमानदारी के साथ कागज पर उकेरा। वे सच्ची रोशनी के पैरोकार हैं जो झूठी चकाचौंध और स्वार्थ का अंधकार मिटाना चाहती है।

गीत-नवगीत की भावप्रवणता हो, गजलों की मारकता हो, दोहों की खरी-खोटी सामाजिक समीक्षा हो या फिर भावी रचनाकारों के लिए तुकान्त कोश और मात्रिक कोश जैसा श्रमसाध्य शोध कार्य–देवेन्द्र माँझी ने हर मोर्चे पर अपनी लेखनी का लोहा मनवाया है। उनका साहित्य आम आदमी की चीख, समाज की विसंगतियों और मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना का प्रामाणिक दस्तावेज है, जो हिंदी और उर्दू दोनों साहित्यों की अमूल्य निधि है।

अपनी सत्तर वर्ष की उम्र में वे आज भी साहित्य-साधना में रत हैं और उनके पाँच उपन्यास प्रकाशन की देहलीज पर हैं। विशेष बात यह भी है कि देवेन्द्र माँझी पौराणिक चरित्रों पर भी बहुत-कुछ खोजपूर्ण और तथ्यपरक कृतियाँ जल्द ही साहित्यिक और धार्मिक समाज को देने वाले हैं।

हमनशीं

बहुत रो लिए तुम्हें खो के हम
अब ना रोएंगे,है ये तेरी कसम
बत्तियां हैं बहुत,दिलों की बुझीं
प्रेम के लो दिए,अब जलाएंगे हम
तेरी कुर्बानियाँ याद आतीं मुझे
कर्ज. तेरा जो रहा,ना चुका पाएंगे हम
मान लो जान लो,है ये मेरी कसम
आतिशों को दिलों के बुझाएंगे हम
तेरा जाना हुआ,कुछ इस तरह
तेरे जाने का गम ना मनाएंगे हम
तू जहाँ भी रहे, याद इतना रहे
बेखुदी में भी तुझको,बुलाएंगे हम
ऐ मेरी हमनशीं,मेरी चाँदनी
तू है तो मुकद्दर मेरा नूर है
याद आएगा तू,हर समय,हर घडी
मेरी जान ए तमन्ना,तू मेरी हूर है
तेरी बातें ही खुद से किए जाएंगे
बहुत रो लिए तुझे खो के हम

अब ना रोएंगे,है ये तेरी कसम
बत्तियां हैं बहुत,दिलों की बुझी
प्रेम के लो दिए,अब जलाएंगे हम

डॉ राशदादाराश

कुछ पल सिर्फ यादें बनते हैं, और कुछ इतिहास।

India Beyond Borders
एक कार्यक्रम से कहीं बढ़कर एक भावना थी–एक ऐसा सपना, जिसने सीमाओं और समुद्रों को पार कर दुनिया भर में बसे भारतीयों के दिलों को एक सूत्र में जोड़ा।

मन जन गण मन गाएगा गीत का लोकार्पण भारत के प्रति साझा प्रेम, गौरव और एकता की अद्भुत अभिव्यक्ति बना। इसी अवसर पर 14 वर्षीय समृद्धि जैन की पहली पुस्तक का लोकार्पण नई पीढ़ी की प्रतिभा, संस्कार और सपनों को समर्पित एक विशेष क्षण रहा।

इस ऐतिहासिक संध्या को सफल बनाने वाले सभी सहयोगियों, कलाकारों, स्वयंसेवकों, समर्थकों, सांस्कृतिक साझेदारों और पूरे परिवार के प्रति हृदय से आभार। विशेष धन्यवाद Neha Couture, Praful ji, Berlin Indiawale, Ashutosh Bhandari, Shaishav Bhatt, Aswathy Sukesh, Dr. O.P. Yadav ji Pawan jii को।

माननीय अतिथियों एवं विशिष्टजनों की गरिमामयी उपस्थिति ने आयोजन को और विशेष बनाया। विशेष रूप से प्रो. एस.पी. सिंह बघेल जी, रमेश अवस्थी जी, पद्मश्री सुरेंद्र शर्मा जी, कउउफ के सुनील जी और संदीप मारवाह जी का स्नेह एवं सहयोग सदैव स्मरणीय रहेगा।

यह किसी एक संस्था या व्यक्ति की उपलब्धि नहीं, बल्कि भारत से जुड़े करोड़ों दिलों की साझा भावना थी।
दुनिया हमें कहीं भी ले जाए, भारत हमारी पहचान, हमारी जड़ों और हमारे हृदय में सदैव जीवित रहेगा।
आइए, इसी भावना के साथ भारत की संस्कृति, विरासत और उज्ज्वल भविष्य को विश्व मंच पर आगे बढ़ाते रहें।

लौटा दे मेरा खोया हुआ प्यार

उदय किशोर साह
मो० पो० जयपुर जिला
बांका बिहार

तेरी दिल की गलियों में मैं
घूम रहा हूँ
ख्वाबों में आई थी तुम्हें ढुंढ़
रहा हूँ
दूर से ही सही दे दो हमें आवाज
एक बार
बाँहों में भर लुँ खुशी से तुमको
दिलदार
तेरे दिल की गलियों में मैं घूम रहा।
हूँ
सावन की अल्हड़ बून्दों संग
झूम रहा हूँ
पर्वत को छु कर आई है देख
मस्त बयार
काश ! हो जाती मुझे सनम तेरी
दीदार

तेरे दिल की गलियों में मैं
घूम रहा हूँ
बस्ती बस्ती सबसे तेरी पता
पूछ रहा हूँ
कहाँ छुप कर बैठी हो मुझे कर
नजरअंदाज
सामने आकर झलक दिखा जा
एक बार
तेरे दिल की गलियों में मैं घूम।
रहा। हूँ
हर कलियों में तेरी ही अक्स
देख रहा हूँ
फिर भी क्यूं गुमसुम हो बैठी हो मेरे
यार
किस खता की सजा हमें दे रही हो
इस बार
तेरे दिल की गलियों में मैं घूम।
रहा। हूँ
हर पल तेरे दिल की धड़कन संग
डोल रहा हूँ
गिले शिकवे भूल कर आ कर मेरे
जीवन श्रृंगार
लौटा दे सनम मुझे मेरा खोया
हुआ मेरा प्यार

मध्यवर्ग में वैचारिक सुगबुगाहट: प्रेमचंद और आलोचनात्मक विमर्श

इक्कीसवीं सदी के भारत का स्वप्न और प्रेमचंद - इस विषय पर कुछ कहने का अवसर नोएडा की हमारी हाउसिंग सोसाइटी। इस छोटी सी सोसाइटी में भी इस विषय में रुचि रखने वाले लगभग चालीस प्रबुद्ध मित्र इकट्ठे हुए।
मैं हैरान हुआ यह देखकर कि इस गैर - अकादमिक मध्यवर्गीय समुदाय ने बहुत ध्यान से वे सारी बातें सुनीं जो हर तरह से आज की वर्चस्वमान विचारधारा के प्रति आलोचनात्मक थीं।
इतना ही नहीं, उन्होंने एक नए पर्सपेक्टिव से परिचय कराने के लिए बहुत प्रेम और प्रसन्नता जाहिर की।
निःसंदेह जेन जी के आंदोलन ने यथास्थिति के गढ़ों में भी आलोचनात्मक विचार के लिए अवकाश पैदा किया है, जिसका पूरा लाभ उठाया जाना चाहिए।

सोशल एंड मोटिवेशनल ट्रस्ट के सावन मिलन समारोह में गीत, नृत्य, कविता और कैटवॉक ने बांधा समां:

नोयडा : दिल्ली स्थित अखिल भारतीय स्वयंसेवी संस्था सोशल एंड मोटिवेशनल ट्रस्ट के तत्वावधान में आयोजित भव्य सावन मिलन समारोह में सावन की उमंग, भारतीय संस्कृति की रंगीन छटा और साहित्यिक-सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का अनूठा संगम देखने को मिला। छह घंटे तक चले इस समारोह में गीत, नृत्य, कविता पाठ, कैटवॉक सहित विभिन्न प्रतियोगिताओं ने उपस्थित लोगों को खूब आकर्षित किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में संस्था के सदस्यों एवं आमंत्रित अतिथियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।
संस्था की राष्ट्रीय अध्यक्षा ममता सिंह के दिशानिर्देश में आयोजित इस कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में हिन्दी-उर्दू अदबी संगम, दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. सैयद अली अख्तर नकवी एवं अजीमा जी उपस्थित रहीं।
अतिथियों ने संस्था द्वारा साहित्य, कला, संस्कृति एवं सामाजिक सरोकारों को लेकर किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।

सावन मिलन समारोह के दौरान गीत, नृत्य, कविता पाठ, कैटवॉक सहित अनेक मनोरंजक एवं रचनात्मक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिभा और रचनात्मकता से समारोह में चार चांद लगा दिए।
कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण सावन क्वीन प्रतियोगिता रही, जिसमें नीलम ओझा ने प्रथम, आकांक्षा गुप्ता ने द्वितीय तथा उर्मिला बंसल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।
कार्यक्रम में अनुपमा श्रीवास्तव, प्रमोद कुमार श्रीवास्तव, मोहन श्रीवास्तव, कालिंदी श्रीवास्तव, सुजाता मिश्रा, रूपा आर्या, नीलम ओझा, अरुणा साह, शिव कांत साह, राजकुमार शर्मा, वीणा शर्मा, उर्मिला बंसल, उषा जी, रेखा रानी , मीणा प्रसाद, उदय प्रसाद, अखिलेश दाऊ जी, रुमा रानी, ली सिंह, कविता सिंह, अनिल मासूम, शानू परासर, सत्या सैनी, आकांक्षा त्यागी, आकांक्षा गुप्ता, कंचन, डी.पी. तिवारी जी, मिथिलेश शर्मा जी, सौम्या, सुशीला जी, संजय कुमार ओझा, हेमा चौधरी, अपर्णा भटनागर एवं मैत्रेयी त्रिपाठी सहित अनेक सदस्यों की सक्रिय सहभागिता रही।
छह घंटे तक चले इस आयोजन में उपस्थित लोगों ने विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का आनंद लेने के साथ स्वादिष्ट जलपान एवं भोजन का भी भरपूर आनंद लिया। पूरे समारोह में सावन की उमंग, उल्लास और आत्मीयता का वातावरण बना रहा।
कार्यक्रम का मंच संचालन संस्था के संस्थापक रवीन्द्रनाथ सिंह ने किया। उन्होंने अपनी प्रभावशाली संचालन शैली से कार्यक्रम को निरंतर जीवंत बनाए रखा।

लखनऊ में लेखक संगठनों का साझा आयोजन: सांप्रदायिकता और बाजारवाद के दौर में प्रेमचंद की प्रासंगिकता

प्रेमचंद की 146वीं जयंती के उपलक्ष्य में 25 जुलाई 2026 से शुरू हुए कार्यक्रम 9 अगस्त 2026 को खत्म हुए हैं। अभी तक 10 राज्यों से प्राप्त रिपोर्टों के अनुसार एक पखवाड़े तक चले इन कार्यक्रमों में जनवादी लेखक संघ के साथ विभिन्न लेखक संगठनों और सांस्कृतिक संगठनों ने तमाम जगहों पर मिलकर आयोजन किए।
केंद्रीय कार्यक्रम लखनऊ में हुआ जिसमें एक विचार गोष्ठी आयोजित की गई। प्रलेस, जलेस, जसम, इप्टा और ऑल इंडिया कैफी आजमी एकेडमी द्वारा आयोजित विचार गोष्ठी का विषय था "प्रेमचंद और सांस्कृतिक आंदोलन की चुनौतियाँ।" विचार गोष्ठी में जनवादी लेखक संघ उत्तर प्रदेश के कार्यकारिणी सदस्य राजेंद्र वर्मा की पुस्तक प्रेमचंद के सरोकार का विमोचन भी हुआ।
विचार गोष्ठी में अपनी बात रखते हुए प्रगतिशील लेखक संघ के केन्द्रीय महासचिव सुखदेव सिंह सिरसा ने कहा कि "साहित्य को राजनीति के आगे चलने वाली मशाल मानने वाले मुंशी प्रेमचंद किसानों, मजदूरों, महिलाओं और हाशिए के लोगों की आवाज थे। समकालीन समय में प्रेमचंद और ज्यादा जरूरी हो जाते हैं क्योंकि आज समूचा विश्व कॉपोरेट्स की गिरफ्त में है। मानवता के समक्ष तीसरे विश्व युद्ध के हालात बना दिए गए हैं। हमारे मुल्क में कारपोरेट और सांप्रदायिक शक्तियों के गठजोड़ ने साझा गंगा-जमुनी सांस्कृतिक तहजीब के सामने बहुत बड़े संकट खड़े कर दिए हैं। युद्ध, नफरत, जलवायु संकट, आर्थिक सामाजिक विषमता, देशों के बीच खड़ी होती दीवारों और मनुष्यों के बीच व्याप्त हो रहीं दूरियों के मद्देनजर यदि लेखकों को आमजन की आवाज को बुलंद करना है तो साझा प्रयास अनिवार्य हैं। आज सभी प्रगतिशील, जनवादी, जम्हूरी, उदारवादी, मानवतावादी लेखकों के साझा मुहाज से ही इन अमानवीय शक्तियों को शिकस्त देकर आमजन की आशाओं-आकांक्षाओं के अनुरूप समाज के सृजन की ओर अग्रसर हुआ जा सकता है। यह मुंशी प्रेमचंद द्वारा प्रशस्त मार्ग का अनुसरण भी होगा और यही आज के समय की अनिवार्यता भी है।"
विचार गोष्ठी का संचालन करते हुए जलेस के केंद्रीय महासचिव नलिन रंजन सिंह ने कहा कि "प्रेमचंद ने लिखा था- सांप्रदायिकता सदैव संस्कृति की दुहाई दिया करती है। आगे उन्होंने यह भी कहा था कि अब केवल एक संस्कृति है और वह है आर्थिक संस्कृति। लोग अपने स्वार्थ के लिए संस्कृति के साथ खेल करते रहते हैं। आज भी संस्कृति की आड़ में सत्ता को मजबूत बनाए रखना का काम किया जा रहा है। ऐसे में यह जरूरी हो जाता है कि देश की बहुलतावादी संस्कृति की रक्षा करते हुए हम अपने सांस्कृतिक आंदोलनों से संस्कृति पर चढ़ाए गए सांप्रदायिकता के खोल को उतारने के लिए एकताबद्ध होकर आगे आएं।"विषय पर बोलते हुए जन संस्कृति मंच के केंद्रीय महासचिव मनोज कुमार सिंह ने कहा कि "हमारा देश विभिन्न धर्मों, जातियों, भाषाओं, प्रांतीय, जनजातीय और लैंगिक समूहों का महासमुद्र है जिसने साम्राज्यवाद से लड़ते हुए अपनी राष्ट्रीय अस्मिता को पाया था। आज इस विविधता को परस्पर वैमनस्य में बदलकर और उसमें निहित एकता को भीतर से तार-तार कर उसके ऊपर भ्रामक, षड्यंत्रकारी सांस्कृतिक

एकरूपता की चादर चढ़ाने की कोशिश हो रही है। देश के किसान, मजदूर, नौजवान, अल्पसंख्यक, आदिवासी, पिछड़े और दलित तबके, लेखक, कलाकार और बुद्धिजीवी इसकी भीषणता को समझ रहे हैं, उसका हर संभव प्रतिकार कर रहे हैं।"
जन संस्कृति मंच के केंद्रीय उपाध्यक्ष रामजी राय ने कहा कि "स्मृति- संदर्भ नहीं जीवित प्रसंग हैं प्रेमचंद। प्रेमचंद की रचनाएं किसी सपाट ऋजु काल में लिखी रचनाएं नहीं हैं। बल्कि उनका ऋजु काल उस समय की सारी लहरों, सारी जटिलताओं को समेटे हुए एक निश्चित टेक पर सधा हुआ है। प्रेमचंद ने अपने समय के मूल्यांकन का मानदंड किसान को बनाया था। स्वतंत्रता आंदोलन के संघर्ष को भी वे इसी मानदंड पर परखते थे। महज अंग्रेज विरोध, गुलामी विरोध से नहीं। गुलामी उनके यहां अंग्रेज प्रभुओं तक सीमित नहीं थी। उसके देशी आधारों से मुक्ति भी उसमें शामिल थी। यानी यह सामाजिक शक्ति न केवल औपनिवेशिक शासन से मुक्ति दिलाएगी, बल्कि सदियों के पुराने भारत को बदलकर एक नया भारत रचेगी। इसलिए जब मैं प्रेमचंद को एक जीवित प्रसंग कह रहा हूं तो इसलिए भी कि आज भी भारत को नवउपनिवेशिक खतरे और पिछड़ेपन से मुक्त कर एक मुकम्मल आधुनिक भारत बनाने के स्रोत किसान ही हैं-दलित, कमजोर, गरीब किसान। इसलिए नहीं कि किसान संख्या में ज्यादा हैं बल्कि इसलिए कि उनको आधुनिक बनाए बगैर भारत को आधुनिक नहीं बनाया जा सकता। और आधुनिक बनने की सबसे ज्यादा सकर्मक सामर्थ्य और ललक भी किसान में ही है। यह प्रेमचंद की आदर्श कल्पना नहीं बल्कि एक सच्चाई है जिसे प्रेमचंद ने तब सबसे गहराई से देखा, समझा था। आप ध्यान से देखिए तो प्रेमचंद किसान से मजदूर बनते मजदूरों को उनकी इस पूरी संपूर्णता में देखते और चित्रित करते हैं। उसी के एक नए गुणात्मक रूप से भिन्न विकास की तरह।"
जनवादी लेखक संघ की केंद्रीय सचिव बलवंत कौर ने कहा कि "प्रेमचन्द ने अपने समय में सामाजिक और सांस्कृतिक आन्दोलन की प्रगतिशील धारा को दिशा दी। उन्होंने साहित्य के माध्यम से समाज में व्याप्त असमानताओं, रूढ़ियों और अन्यायों को चुनौती दी। उनके विचारों के सामने हमेशा विरोधी धारा खड़ी रही, जिसने परिवर्तन के प्रयासों को रोकने की कोशिश की। इसके बाद धार्मिक आधार पर देश के बँटवारे ने सांस्कृतिक पहचान को और कमजोर किया तथा हम और वे की राजनीति को जन्म दिया। आज की सांस्कृतिक चुनौतियाँ भी उसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और विरोधी प्रवृत्तियों से जुड़ी हुई हैं। प्रेमचन्द का साहित्य इन चुनौतियों , जटिलताओं को समझने और आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करने में हमारी मदद करता है।"
प्रगतिशील लेखक संघ की वाराणसी इकाई की सचिव वंदना चौबे ने कहा कि "प्रेमचंद लिखते हैं कि सांप्रदायिकता संस्कृति का मुखौटा पहनकर आती है। जो शक्तियाँ संस्कृति की रक्षा के नाम पर समाज को बाँटती हैं, वे वास्तव में सत्ता और स्वार्थ की राजनीति करती हैं। दर हकीकत संस्कृति का वास्तविक संबंध मनुष्य की जीवन-स्थितियों से है, इसलिए भूखे, गरीब और शोषित व्यक्ति के लिए सबसे बड़ा सवाल संस्कृति नहीं; जीवन है। इसलिए उनके तमाम लेखन में यह भाव स्पष्ट दिखाई देता है कि संस्कृति कोई एकरेखीय चीज नहीं बल्कि वर्गीय स्थिति है। हर समाज में शासक-वर्ग की संस्कृति एक तरह की होती है और मेहनतकश वर्ग की संस्कृति एक तरह की। राजनीतिक और आर्थिक वर्चस्व से सत्ताएं अपनी संस्कृति को आम मेहनतकश जनता पर काबिज करती हैं। कई बार बल पूर्वक और कई बार आराम से खुद जनता को सहमत करके। इसके लिए राज्य अपने तमाम सांस्कृतिक और अकादमिक संस्थानों के माध्यम से मेहनतकशों की संस्कृति को या तो खत्म करता है या उन्हें अपने ढंग से एप्रोप्रिएट कर लेता है। इसलिए प्रेमचंद संस्कृति की आलोचना उसके अंतर्विरोधों के भीतर से करते हैं। इन अंतर्विरोधों को समझे बिना आज के पूंजीवादी समाज की परत समझना मुश्किल है।"
कैफी आजमी एकेडमी की ओर से बोलते हुए खान अहमद फारूक ने कहा कि "प्रेमचंद हमेशा हर उस आंदोलन के साथ थे जो इंसान की आजादी के लिए था, इंसाफ के लिए था, गैर बराबरी के खिलाफ था, किसान के लिए था, मजदूर के लिए था, प्रेमचंद ने अपनी कहानियों और उपन्यास के जरिया समाज की सांस्कृतिक चेतना को बदलने का प्रयास किया जो आज भी हमारे लिए प्रेणना का स्रोत है।"
अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कैफी आजमी एकेडमी के सद्र अली अहमद फातमी ने कहा कि "आज की सबसे बड़ी चुनौती फिरकापरस्ती है। उसके बाद उससे बड़ी चुनौती बाजारवाद है। फिरकापरस्ती से तो निपटा जा सकता है लेकिन बाजारवाद से निपट पाना आसान नहीं है क्योंकि वह तहजीब की चादर ओढ़ कर आती है। प्रेमचंद ने भी महाजनी सभ्यता में यही कहा था।"
विचार गोष्ठी में आमंत्रित मुख्य अतिथि जस्टिस बी. डी. नकवी ने प्रेमचंद के साहित्य को हर पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत बताया। कहानीकार नाजिश अंसारी ने भी प्रेमचंद पर अपने विचार रखे। अतिथियों का स्वागत फराहीम ने किया और धन्यवाद ज्ञापन करुणा शंकर ने किया। सभी अतिथियों को एकेडमी की ओर से कलम भेंट की गई। स्वागत सत्र का संचालन रेशमा परवीन ने किया।
विचार गोष्ठी में लखनऊ शहर और उसके आसपास के जाने-माने साहित्य प्रेमी उपस्थित थे। लगभग 4 घंटे तक चले कार्यक्रम में सभागार हर समय पूरी तरह से भरा रहा। संख्या बढ़ने पर अतिरिक्त कुर्सियाँ भी लगानी पड़ीं।

मेरे लिए गौरव का क्षण: 'रक्तबीज आदमी है का क,ख,ग' में मेरा आलेख और एक यादगार गोष्ठी

दोआबा साहित्य व कला अकादमी द्वारा आयोजित कार्यक्रम रक्तबीज आदमी है का क,ख,ग पुस्तक पर केंद्रित था जो सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। ध्यातव्य है यह पुस्तक मोहन सपरा कृत रक्त बीज आदमी है कि समीक्षात्मक पुस्तक पर बैठक हुई जिसका संपादन डॉ विनोद कुमार व डॉ आत्माराम बारूपाल ने किया है। और इसका प्रकाशन आस्था प्रकाशन गृह, जालंधर से हुआ है।
इस पुस्तक में देश से लगभग 50/60 लेख सम्मिलित हुए हैं।
इसमें मेरा भी लेख शामिल किया गया है। इसके लिए संपादक को हार्दिक आभार ज्ञापित करता हूं।
इस अवसर पर डॉ जवाहर धीर, डॉ तरसेम गुजराल, डॉ यश चोपड़ा, रविन्द्र सिंह चोट, डॉ अजय शर्मा वरिष्ठ पत्रकार, संरक्षक टीडी चावला,राजेश अध्याय, मैं दिलीप कुमार पाण्डेय,हरचरन भारती आदि सभी ने रक्तबीज आदमी है का कखग पर विधिवत रूप से चर्चा की और अपनी रचनाएं सुनाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

स्वयं से कितना प्रेम

मुझे स्वयं से कितना प्रेम है
या है भी कि नहीं
ये सोचते हुए
खड़े हो उठते हैं
दो चार प्रश्न और
इस प्रश्न के समानांतर
मानों प्रश्न से ही बस
दिया जा सकता है
इस प्रश्न का उत्तर
क्या करते हैं लोग
स्वयं से प्रेम होने पर
अपने लिए,
क्या किया भी जा सकता है
प्रेम अपने आप से
अपने आप को जानने के बाद
अंदर बाहर उल्टा सीधा
हर तरह से,
कि अपनी हर अच्छाई
हर बुराई के साथ
स्वीकार हैं हम खुद को।
मैंने रखा है खुद को
जांच के दायरे में
कि मैं जब भी खुद के प्रेम में पड़ूं
मैं उस प्रेम के लायक रहूं

कंचन प्रसाद

प्राप्ति प्रसिद्ध बनाती है लेकिन कृतज्ञ प्रतिदान आपको सिद्ध बना सकता है

दुर्गेश का वही छन्द जब बीसवीं बार सुना तो मेरी ऊर्जा कहने लगी ह्लबचाओ बचाओह्वलेकिन दुर्गेश एक टिप्पणी की सही प्लेसमेंट जंचवाने के लिए इतना उर्जित था कि उसे आभास ही नहीं होगा कि उसका पूरा काव्यपाठ उसी रात बीसवीं बार सुन रहा हूँ और सुबह चार बज चुके हैं और उसके मेंटर को नींद आ रही है । उधर दीपक दनादन दिया गया कार्य करने में ब्रह्म मुहूर्त को गौधूली बेला समझ रहा था । हीरा मणि वैष्णव पूरी ऊर्जा से रिहर्सल कर रहा है । वहीं सौरभ जायसवाल तात्कालिक टिप्पणियाँ कर कर के हँसा रहा था और निर्भय निश्छल भयभीत होकर दिया गया कार्य करने में जुटा हुआ था । तभी इस सभी को डाँट कर आग्रह पूर्वक सोने का मेरा आदेशात्मक स्वर कमरे में गूंजा । मुझे डर था कहीं इनका स्वास्थ्य खराब ना हो जाये या गले पर जागरण का प्रभाव ना दिखे । लेकिन इनकी लगन देख कर मन प्रसन्न था । सभी बारी बारी अपने कक्ष की ओर प्रस्थान कर गए क्योंकि सभागार में सुबह १० बजे नाश्ता करके अपनी अपनी प्रस्तुतियां जो देनी हैं ।

अगला दृश्य

बॉल रूम खचाखच भरा हुआ था युग कवि ि ह्य४ेि१ ५्र२ँ६२ संचालन कर रहे हैं । दुर्गेश पहली टिप्पणी से ही छा गया दीपक दनादन स्टैंडिंग ओवेशन ले रहा है । दीपक पारीख ने जादू बिखेर रखा है । सधे हुए गीतकारों में मौलिक हास्य और

व्यंग्य ने महफिल को हल्का फुल्का बना रखा है । मेंटर्स के लिए तालियाँ बज रही हैं । रमेश मुस्कान जी की तरफ मैंने देखा जो मेरे भी मेंटर हैं उनके हँसते हुए चेहरे को देखा तो लगा इतनी व्यवस्थाओं और व्यस्तताओं के बीच इतना बड़ा साहित्यिक यज्ञ करने वाला इतना सहज कैसे रह सकता है ? वहीं युग कवि डॉ कुमार विश्वास जी जिनके बारीक दिशा निर्देशन और कल्पना ने आने वाली पीढ़ी को २१ नए नाम सौंप दिए जो आने वाले कई दशकों तक कवि सम्मेलन की परंपरा को संभालेंगे । उन्होंने सिद्ध कर दिया कि प्राप्ति प्रसिद्ध बनाती है लेकिन कृतज्ञ प्रतिदान ही आपको सिद्ध बना सकता है ।सातों दिन पूरे पूरे समय कवियों को एक्सपर्ट राय देकर जो आकार आपने दिया है वो आपके समर्पण और परिश्रम का सूचक है

आपने अधगढ़े पत्थरों को सजीव मूर्त रूप दे दिया ।

डॉ सरिता शर्मा जी जैसी मौलिक और महान गीतकारा,भाई ज्ञान प्रकाश आकुल जैसे गीत विज्ञ ,कुलदीप अंगार जी जैसे छंद विज्ञ और अंकिशा श्रीवास्तव जैसी श्रेष्ठ स्वर साधिका सहित हम कुल पाँच मेंटर्स फूले नहीं समा रहे इस यज्ञ में अपनी भूमिका से । उधर पूरी डिजिटल खिड़की की टीम सीमा पर खड़े सिपाही की भाँति अपना कर्तव्य निर्वहन कर रही थी । भाई प्रवीण पांडे के कुशल नेतृत्व में किसी सपने के साकार होने जैसा ये अनुष्ठान इस तकनीकी के सर्वोच्च पायदान पर खड़े हर क्षेत्र के लोगो के लिए चुनौती वाले दौर में साहित्य की रक्षा करने की युद्ध विद्या सिखाने वाला सिद्ध होगा ।
अगली पोस्ट गीतकारों के लिए लिखूँगा क्योंकि उन सिद्धहस्त गीतकारों पर लिखना भी चुनौतीपूर्ण कार्य है जिन्होंने अपनी रचनाधर्मिता से सिद्ध किया कि कवि सम्मेलन के इस दौर में गीतों की पालकी उठाने वाले नए कहार तैयार हो चुके हैं ।
[12:27, 10/8/2026]

डिजिटल साहित्य २४ पत्रिका-डिजिटल संस्करण-मीडिया पंचायत न्यूज पोर्टल दिल्ली कार्यालय २४ आदर्श गली, पालमगाँव नई दिल्ली, प्रथम तल ११००४५
नोट- उपर्युक्त ई पेपर को अवैध रूप से छपवाना कानूनन अपराध है।